पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.07.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

43वें वर्ष में युवा उद्घोष का प्रवेश

आप सभी को हार्दिक बधाई

वर्ष-43 अंक-04 श्रावण-2083 दयानन्दाब्द 202 16 जुलाई से 31 जुलाई 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

करनाल में महर्षि दयानन्द सरस्वती चौक का लोकार्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार समानता एवं राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देते हैं —मनोहर लाल खट्टर

करनाल, 6 जुलाई, आर्य केंद्रीय सभा, करनाल द्वारा निर्मित महर्षि दयानन्द सरस्वती चौक सेक्टर 12 का लोकार्पण आज केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री श्री मनोहर लाल के कर कमलों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार एवं हवन—यज्ञ के बीच भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ एवं भजन—कीर्तन से हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में आर्य समाज के पदाधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। इसके उपरांत केंद्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल ने चौक का लोकार्पण करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार आज भी समाज को सत्य, शिक्षा, समानता एवं राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने आर्य केंद्रीय सभा, करनाल द्वारा किए गए इस प्रेरणादायी कार्य की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। इस अवसर पर करनाल के विधायक श्री जगमोहन आनंद एवं महापौर श्रीमती रेनू बाला गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए आर्य केंद्रीय सभा को इस महत्वपूर्ण पहल के लिए बधाई दी तथा कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती चौक आने वाली पीढ़ियों को भारतीय संस्कृति एवं वैदिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य करेगा। कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित आर्किटेक्ट ललित सुखीजा , भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण लाठर तथा सांसद प्रतिनिधि श्री कविन्द्र राणा सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। लोकार्पण के पश्चात श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। आर्य केंद्रीय सभा, करनाल के प्रधान प्रो. आनंद सिंह आर्य एवं महामंत्री स्वतंत्र कुकरेजा ने सभी अतिथियों, प्रशासनिक अधिकारियों, सहयोगियों एवं उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह चौक महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों के प्रचार—प्रसार एवं समाज में वैदिक संस्कृति के संवर्धन का एक सशक्त माध्यम बनेगा। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा के पदाधिकारियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ तथा अंत में सभी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से वेदमित्र आर्य,ओमप्रकाश आर्य, ओ पी सचदेवा, पूर्व पार्षद मुकेश अरोड़ा, हंसराज गुलाटी,रोशन आर्य, हरेंद्र चौधरी, मुकेश आर्य,वेद खुराना, देशपाल ठाकुर,पार्षद आयशा कुमार, प्रिया आर्या,कौशल सचदेवा, सावित्री कंबोज, शशि आर्या उपस्थित रहे।

दिल्ली चलो दिल्ली दिल्ली चलो दिल्ली दिल्ली चलो दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 48वे स्थापना दिवस के अवसर पर

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान शताब्दी समारोह

रविवार 6 सितम्बर 2026 प्रातः 9 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

स्थानः श्री बृज मोहन मुंजाल सभागार, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट —1, नई दिल्ली

प्रीति भोज दोपहर 2.00 बजे। आप सादर आमंत्रित हैं।

भवदीयः— अनिल आर्य महेन्द्र भाई धर्मपाल आर्य

वेदों की शिक्षायें विश्व के सभी मानवों के लिए कल्याणकारी

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

सूर्य, चन्द्र, पृथिवी तथा नक्षत्रों आदि से युक्त हमारी यह भौतिक सृष्टि मनुष्योत्पत्ति से बहुत पहले बन चुकी थी। अतः इसे मनुष्यों ने नहीं बनाया यह बात तो स्पष्ट है। मनुष्य एक, दो व करोड़ों मिलक र भी इस सृष्टि व इसके एक ग्रह को भी नहीं बना सकते। यदि ऐसा है तो फिर इस सृष्टि को किसने बनाया है? इसका उत्तर है कि इस जगत् में एक सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र सत्ता है जिसने इस जगत् को बनाया है। इसे ही ईश्वर व परमात्मा भी कहते हैं। चेतन देवों में यही परमात्मा सबसे बड़े देव अर्थात् महादेव हैं। मनुष्यों में भी दिव्य गुण पाये जाते हैं अतः उन दिव्य गुणों के धारण से वह भी देवता कहलाते हैं। माता, पिता व आचार्य प्रमुख तीन चेतन देवों में आते हैं, अतः अपनी सन्तानों एवं शिष्यों द्वारा पूजनीय, स्तुति करने योग्य व उपासनीय होते हैं। ईश्वर इन सब देवों से भिन्न हैं। वह महादेव हैं जिसके सभी मनुष्य व प्राणियों पर अनन्त उपकार हैं। परमात्मा ने न केवल सृष्टि बनाई है अपितु वही सब प्राणियों को अपने ज्ञान, विज्ञान व शक्तियों से जन्म देता व पालन आदि भी करता है। हमारा जीवन एक क्षण के लिये भी उसके उपकार किए बिना व्यतीत होना सम्भव नहीं है। अतः ऐसे ईश्वर के प्रति सब जीवों वा मनुष्यादि प्राणियों का कृतज्ञ होना स्वाभाविक एवं अनिवार्य है। जो ज्ञानी व विवेकीजन समाज में होते हैं वह ईश्वर के उपकारों को जानकर उसको और अधिक जानने व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना को अपना आवश्यक कर्तव्य जानकर जन्म से मृत्यु के अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करते हैं जैसा हम ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी महापुरुषों के जीवन में देखते हैं। हमें भी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप को यथार्थ रूप में जानना चाहिये। ईश्वर को जानने में सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, 11 उपनिषद, 6 दर्शन सहित ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद परम सहायक एवं लाभकारी हैं। चार वेद ईश्वर से सृष्टि की आदि में उत्पन्न सर्वविद्याओं से युक्त ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें हैं और वेदों से ही संसार में भाषा एवं ज्ञान का प्रचार–प्रसार हुआ है। विशुद्ध मनुस्मृति का भी सभी मनुष्यों को अध्ययन करना चाहिये इससे अनेक विषयों के ज्ञानवर्धन सहित द्वेषी लोगों द्वारा मनुस्मृति के विरुद्ध फैलायी गई भ्रान्तियों का निवारण होगा। इन सब ग्रन्थों के अध्ययन से हम सच्चे आस्तिक बन सकते हैं और ऐसा करके हम अपने व दूसरों के जीवन को सुखी एवं उन्नति करने वाला बना सकते हैं।

मनुष्य के मन में जिज्ञासा हो सकती है इस सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है तो मनुष्य व इतर प्राणियों की उत्पत्ति ईश्वर से हुई या अपने आप हो गई? ज्ञान कहां से कब व कैसे उत्पन्न व आविर्भूत हुआ? भाषा की उत्पत्ति कब व किससे हुई? इन सब प्रश्नों का उत्तर लौकिक साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। इनके उत्तर जानने का ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में प्रयत्न किया था और उन्होंने इन प्रश्नों के यथार्थ उत्तर व समाधान प्रस्तुत किये थे। यह उत्तर हमें ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध होते हैं। ऋषि दयानन्द प्रमाण एव युक्तियों सहित बताते हैं कि यह समस्त जगत् व ब्रह्माण्ड सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान ईश्वर से उत्पन्न हुआ है। ईश्वर अनादि व नित्य सत्ता है। वह अविनाशी एवं अनन्त है। उसका ज्ञान व शक्तियां भी अनन्त है। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। अतः हमें यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि चेतनसत्ता सर्वज्ञ ईश्वर में सब विद्याओं के ज्ञान सहित भाषा भी निहित है। इस ज्ञान व भाषा के द्वारा ही वह हमारे हृदय में समय समय प्रेरणा करते हैं। आत्मा में होने वाली ज्ञात व अज्ञात प्रेरणाओं के कारण से भी ईश्वर का अस्तित्व एवं उसकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है।

सृष्टि में प्राणी जगत एवं ज्ञान की उत्पत्ति पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि सृष्टि के आदि काल में सभी प्राणियों की अमैथुनी सृष्टि होती है। यह अमैथुनी सृष्टि जो बिना माता–पिता के संसर्ग के द्वारा होती है, उसे परमात्मा किया करते हैं। सृष्टि की आदि में मनुष्यों की उत्पत्ति भूमि रूपी माता के गर्भ से परमात्मा करता है। अन्य पशु आदि प्राणियों को भी परमात्मा ने इसी प्रकार मुख्य भौतिक पदार्थ भूमि व पृथिवी के गर्भ में से उत्पन्न किया है। पृथिवी के भीतर ही अमैथुनी सृष्टि में जन्म लेने वाले मनुष्यों व प्राणियो के शरीर बनते हैं और उनसे आत्मा को संयुक्त करने का काम परमात्मा ही करता है। अन्य किसी प्रकार से यह कार्य हो ही नहीं सकता। अतः सब को आदि अमैथुनी सृष्टि को परमात्मा से भूमि माता के गर्भ से ही मानना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने यह भी बताया है कि आदि सृष्टि युवावस्था में हुई थी। यदि परमात्मा आदि सृष्टि में शिशुओं को बनाता तो उनका पालन करने के लिये माता–पिताओं की आवश्यकता पड़ती और जो वृद्धावस्था में करता तो उनसे सन्तान उत्पत्ति न होने से सृष्टि का क्रम आगे नहीं चल सकता था। अतः मनुष्यों की सृष्टि आदि काल में प्रथम अमैथुनी हुई और सभी मनुष्य अर्थात् स्त्री–पुरुष युवावस्था में उत्पन्न हुए थे। यह भी बता दें कि ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में वर्णन तथा महाभारत के एक श्लोक के अनुसार मनुष्य की प्रथम सृष्टि भारत के तिब्बत प्रदेश में हुई थी। सृष्टि की आदि में सारी पृथिवी में कहीं कोई एक देश व राजा नहीं था। तिब्बत में हुई मनुष्यों की आदि सृष्टि ने ही सारे विश्व में मनुष्यों को बसाया है। उन्हीं ने पहले आर्यावर्त बसाया और बाद में पूरे विश्व में फैल कर अन्य स्थानों पर मनुष्यों की जनसंख्या में वृद्धि की। 1 अरब 96 करोड़ वर्ष से अधिक पुराना इतिहास होने से सभी लोग अपने सत्य इतिहास को भूल गये हैं परन्तु तिब्बत में सृष्टि होने और आर्यों के पूरे विश्व में फैलने का इतिहास विश्वसनीय एवं तर्क सहित महाभारत आदि के प्रमाणों से पुष्ट है।

मनुष्यों के उत्पन्न होने पर उन्हे ज्ञान देने की आवश्यकता थी। मनुष्य बिना ज्ञान व भाषा के अपना कोई कार्य नहीं कर सकते। परमात्मा भी नहीं चाहेगा कि सृष्टि की आदि में मनुष्यों को बिना किसी कारण ज्ञान व भाषा से वंचित रखा जाये। सभी पशु व पक्षियों को भी वह स्वभाविक ज्ञान देता है जिससे वह अपने सभी व्यवहार सम्पन्न करते हैं। सृष्टि के आदि काल में परमात्मा ही सर्वज्ञ व सर्वज्ञानमय सत्ता होती है। सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से वह सभी मनुष्यों की आत्मा के भीतर व बाहर भी विद्यमान होती है। परमात्मा सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान हैं। वह जीवात्माओं की आत्मा में प्रेरणा देकर जीवात्माओं को आवश्यक ज्ञान दे सकते हैं। सम्मोहन की क्रिया में भी एक मनुष्य दूसरे मनुष्यों को विशेष परिस्थिति में सम्मोहन के द्वारा अपनी इच्छानुसार कार्य कराता है, ऐसा माना व समझा जाता है। परमात्मा तो जीवात्मा के भीतर भी है। अतः वह मनुष्यों के लिये आवश्यक व हितकर तथा उन्हें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष आदि का सम्पूर्ण ज्ञान वेद ज्ञान के रूप में देता है। परमात्मा ही अमैथुनी सृष्टि के सभी मनुष्यों का आदि गुरु होता है। यह बात योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि ने लिखी है। इस वेदज्ञान देने के कारण ही महर्षि पतंजलि ने ईश्वर को आदि गुरु कहा है। ऋषि दयानन्द ने इस विषय विशेष का चिन्तन करने के साथ उपलब्ध साक्ष्यों का भी अध्ययन व मनन किया था। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में वेदोत्पत्ति प्रक्रिया को विस्तार से लिखा है। ईश्वर से प्रेरित अथर्ववेद काण्ड 10 में वर्णन मिलता है कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद सब जगत सब प्राणियों को उत्पन्न व धारण करने वाले परमात्मा से उत्पन्न हुए हैं। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 8 के अनुसार ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में बताते हैं कि जो स्वयम्भू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन, निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणर्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करता है। कुछ लोगों को भ्रान्ति है कि ईश्वर निराकार है। निराकार होने से वेद विद्या का उपदेश विना मुख द्वारा वर्णोच्चारण किये कैसे हो सका होगा? इसका उत्तर ऋषि दयानन्द ने यह कह कर दिया है कि परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में उसे कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है। क्योंकि मुख जिह्वा से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिये किया जाता है, कुछ अपने लिये नहीं किया जाता। क्योंकि मुख जिह्वा के व्यापार करे बिना ही मन में अनेक व्यवहारों का विचार ओर शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों को अगुलियों से मूंद कर देखो, सुनो कि बिना मुख जिह्वा ताल्वादि स्थानों के कैसे–कैसे शब्द हो रहे हैं। वैसे परमात्मा ने जीवों को अन्तर्यामीरूप से उपदेश किया है। किन्तु केवल दूसरे को समझाने के लिए उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेदविद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से (जीवात्मा के भीतर व्यापकता से) जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरों को सुनाता है। इसलिये ईश्वर में निराकारस्वरूप वाला होने से वेदोपदेश न कर सकने का दोष नहीं आ सकता। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रमाण से यह भी बताया है कि प्रथम सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा नाम के ऋषियों की आत्मा में एक–एक वेद का प्रकाश किया था। इन ऋषियों ने एक एक वेद का ज्ञान ब्रह्मा जी को कराया था। मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा से ऋग, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया। वेद ज्ञान संस्कृत भाषा में है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा ने संस्कृत भाषा सहित चार वेदों का ज्ञान मनुष्यश्रेष्ठ चार ऋषियों को दिया था। उन्हीं चार ऋषियों के द्वारा ब्रह्मा जी चार वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ और इन पांच ऋषियों ने मिलकर ही अन्य सभी स्त्री व पुरुषों को वेद ज्ञान व साधारण बोलचाल का ज्ञान भी कराया था। वेदाध्ययन की ऋषि परम्परा अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा व ब्रह्मा जी से होती हुई ऋषि जैमिनी और ऋषि दयानन्द तक पहुंची है।

इस उल्लेख से स्पष्ट होता है कि आदि मनुष्यों को परमात्मा ने वेदों का ज्ञान देकर ज्ञान व विज्ञान से सम्पन्न किया था। भाषा भी हमें परमात्मा से ही मिली थी। संस्कृत व वेद संसार के सभी पूर्वजों की भाषा व ज्ञान रहे हैं। सब लोगों का संस्कृत भाषा एवं वेदों के अध्ययन–अध्यापन तथा इनके प्रचार व प्रसार का समान रूप से अधिकार है। वेदों का अध्ययन करने पर यह तथ्य भी ज्ञात होता है कि चारों वेदों की सभी शिक्षायें संसार के सभी मनुष्यादि प्राणियों के लिए हितकारी एवं कल्याणकारी हैं और वेद ही विश्व में सुख व शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित करने का आधार हैं व हो सकते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

श्रावणी पर युवा संस्कार अभियान

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में **श्रावणी पर्व** पर **शनिवार दिनांक 8 अगस्त से रविवार 16 अगस्त 2026** तक **युवा संस्कार अभियान** चलाया जाएगा। मिशन 25 के अन्तर्गत लक्ष्य है 12 वर्ष से 25 वर्ष तक के युवाओ को आर्य समाज के साथ जोड़ना इसमें **यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम रहेंगे** और **यज्ञोपवीत** दिए जाएंगे अपने क्षेत्र में यह 2 घंटे के कार्यक्रम अवश्य रखे।

1. **रविवार 09 अगस्त 2026 सुबह 11 बजे**
   स्थानः शहीद भगत सिंह स्टेडियम, मंगोलपुरी,
   संयोजक– दशरथ भारद्वाज
2. **रविवार 09 अगस्त 2026 सुबह 09 बजे**
   स्थानः ग्राम नदौना, जिला–हाथरस
   आयोजक– श्री जितेन्द्र आर्य एवं केदारनाथ आर्य
   व्यवस्थापक–श्री भगवती प्रसाद, प्रेमपाल एवं वीरपाल
3. **रविवार 09 अगस्त 2026 प्रातः 09 बजे**
   स्थानः आर्य समाज नगरोटा, जिला–कांगड़ा, हि.प्रदेश
   आयोजक– श्री राकेश आर्य एवं श्री कमल आर्य
   व्यवस्थापक–श्री संजय नागपाल
4. **रविवार 09 अगस्त 2026 प्रातः 06 बजे**
   स्थानः ईमाइलपुर, दुर्गा बिल्डर, योगा ग्राउंड,
   फरीदाबाद, हरियाणा
   आयोजक– आशुतोष आर्यन, अनिल त्रिपाठी
5. **मंगलवार 11 अगस्त 2026 सुबह 11 बजे**
   स्थानः ए ब्लॉक, मंगोलपुरी
   आयोजक– राधा भारद्वाज
6. **शनिवार, 15 अगस्त 2026**
   दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक
   स्थानः आर्य समाज सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली
   आयोजक– यशोवीर आर्य
7. **शनिवार 15 अगस्त 2026 प्रातः 9 बजे**
   स्थानः आर्य समाज, गांव–बहराबाद, डाकखाना–अतरौली
   जिला–आगरा, उत्तर प्रदेश
   आयोजक– श्री प्रदीप कुमार एवं भुपनेश कुमार
   व्यवस्थापक–श्री सुशील कुमार एवं रूपेन्द्र कुमार
8. **शनिवार 15 अगस्त 2026, प्रातः 9 बजे**
   स्थानः चाहड़ी, मोहलकड़, पंचायत घर, त.–नगरोटा
   बगवां, जिला–कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
   आयोजक– श्री कमल आर्य एवं श्यामा आर्य
   व्यवस्थापक–श्री कश्मीर धीमान एवं वीणा धीमान जी
9. **शनिवार 15 अगस्त 2026, प्रातः 10 बजे**
   स्थानः टीनू पब्लिक स्कूल, संगम विहार, दक्षिणी दिल्ली
   संयोजक– रामफल खरब, देवदत्त आर्य
10. **शनिवार 15 अगस्त 2026, प्रातः 9 बजे**
    स्थानः आर्य समाज गुड़मंडी, दिल्ली
    संयोजक– वीरेन्द्र आहूजा, विमल आहूजा
11. **सोमवार, 17 अगस्त 2026, प्रातः 9 बजे**
    स्थानः गांव + डाकखाना–भरम, जिला–सोनीपत
    मणिपुर, प्रदेश
    आयोजक– धर्म युद्ध पंडित धर्म प्रकाश आर्य
12. **शनिवार, 08 अगस्त 2026, प्रातः 9 बजे**
    स्थानः आदर्श पब्लिक स्कूल मकनपुर, इन्द्रिरा पुरम, गा.
    आयोजक– श्री सुबोध कुमार एवं ममता चौहान

निवेदकः

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	सौरभ गुप्ता	रामकुमार सिंह	अरूण आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय संगठन मन्त्री	प्रदेश संचालक	प्रदेश महामन्त्री

जम्मू में पहला गुरुकुल स्थापित व जम्मू शिविर का सुन्दर दृश्य

शनिवार 13 जून 2026, जम्मू कश्मीर में पहला गुरुकुल स्थापित किया गया परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य अवलोकन करने पहुंचे और सद प्रयास की प्रशंसा की अरुण आर्य जी पूरा समय देकर सेवा कर रहे हैं इस समय गुरुकुल में 30 विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं सभी आर्य महानुभाव को अरुण जी का सहयोग करना चाहिए– अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 793वां वेबिनार सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश सचमुच प्रत्येक प्राणी मात्र की श्वांस है –आचार्या विमलेश बंसल

सोमवार, 6 जुलाई 2026,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में मानव जीवन की श्वास सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 792 वाँ वेबीनार था। वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल दर्शनाचार्या ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश सचमुच प्रत्येक प्राणी मात्र की श्वांस है। 1. मानव जीवन की सबसे पहली श्वास ही सत्य की श्वांस होती है,क्योंकि झूठ के साथ जीवन ज्यादा देर तक नहीं चल सकता। 2. जिस तरह शरीर के लिए ऑक्सीजन जरूरी है, उसी तरह आत्मा के लिए सत्य और प्रकाश जरूरी हैं। 3. सत्य वो श्वांस है जो रिश्तों को मजबूत करती है और विश्वास की डोर को कभी टूटने नहीं देती। 4. प्रकाश अज्ञान के अंधकार को मिटाता है और हमें सही–गलत की पहचान कराता है। 5. जब इंसान सच बोलता है तो उसकी श्वांस में भी एक अलग सुकून और गहराई आ जाती है। 6. प्रकाश बाहर का ही नहीं,मन के अंदर का भी होना चाहिए,तभी जीवन में शांति आती है। 7. हर सुबह की पहली श्वांस हमें याद दिलाती है कि आज फिर से सच के साथ जीना है और उजाले की तरफ बढ़ना है। 8. इसलिए मानव जीवन तभी सार्थक है जब उसकी हर श्वांस में सत्य हो और हर कदम में प्रकाश हो। मुख्य अतिथि अनिता रेलन व अध्यक्ष वंदना शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश अनेकों क्रान्तिकारियों का प्रेरणा स्रोत रहा हैं। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा जनक अरोड़ा कमला हंस संतोष दर पिंकी आर्य सुधीर बंसल आदि ने मधुर भजन सुनाए।

वैचारिक कर्म विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

विचारों की पवित्रता आवश्यक है –अतुल सहगल

सोमवार, 29 जून 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में वैचारिक कर्म विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 791 वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने मानव उन्नति के परिपेक्ष्य में इस विषय की महत्ता को सामने रखा। उन्होंने सबसे पहले भारतीय संस्कृति और इतिहास का वह उदाहरण प्रस्तुत किया जिसमे महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह बाणों की शैय्या पर प्रबल मानसिक प्रण व वैचारिक कर्म शक्ति के आधार पर तब तक मृत्यु को टालते रहे जब तक सूर्यदेव दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश नहीं कर जाते।तत्पश्चात वक्ता ने यह सन्देश दिया कि वैदिक दर्शन में विचारों को ही सब कर्मों, व्यवहारों और मानव जीवन की गति का मूल माना गया है। यह कहते हुए उन्होंने वैचारिक कर्म (मानसिक क्रिया) को दिशा देने वाले चार प्रमुख वेद मन्त्र प्रस्तुत किये। साथ ही आम दैनिक जीवन का उदाहरण देते हुए कहा कि मन में यदि हम किसी व्यक्ति को गाली दें या कोसें तो वह विचार रूपी कर्म नकारात्मक तरँगें छोड़ता है जो उस व्यक्ति के अन्तःकरण तक पहुंचती हैं। हम काम/क्रोध/चिंता/घृणा/भ्रम के तर्कहीन व त्रुटिपूर्ण विचार मन में आने दें तो वे आगे के सब कर्म बिगाड़ते हैं। हमारी क्षति व हानि करते हैं।हमें शिक्षा दी जाती है – बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत कहो। इस वाक्य में बुरा मत सोचो जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। व्यापार/व्यवसाय में हम तर्कपूर्ण और युक्तिपूर्ण विचार से काम लें तो हानि से सर्वदा बचे रहेंगे। हमारे विचार सकारात्मक हों। द्वेष, प्रतिशोध और अभिमान से प्रेरित न हों। स्मरण रहे कि अविवेक, क्रोध, मोह, मद मन के नहीं, आत्मा (स्वयं) के कूलक्षण हैं स मन तो जड़ है ; बुरे विचारों के जनक–इन कूलक्षणों के लिए मन को दोषी न ठहराएं। योगाभ्यास से मन को वश में करना सीखें। गायत्री मन्त्र का प्रातःकाल और शिवसंकल्पमस्तु मन्त्रों का सांयकाल के समय जाप करें। इससे मन और बुद्धि दोनों सात्विक गुण ग्रहण करेंगे और हमारे विचार भी शुभ बनेंगे। शुभ विचार ही शुभ संस्कार व शुभ फलों के बीज हैं।शुभ विचार का आधार विद्या/सत्यज्ञान है। वेद और विद्वानों के माध्यम से इसे ग्रहण करें। मुख्य अतिथि हापुड़ आर्य समाज के पूर्व प्रधान आनंद प्रकाश आर्य ने कहा कि विचारपुर्ण कर्म से ही हम उन्नति या अवनीति को प्राप्त होते है।विचार शुद्ध होने से मन शुद्ध होता है जिससे हम शुद्ध कर्म करते हैं। अशुद्ध होने पर सब कार्य भी अशुद्ध हो होंगे। शुद्ध वैचारिक कर्म के लिए हमे आर्य समाज के तीसरे नियम को आत्मसात करना चाहिए। वेद ज्ञान से वैचारिक शुद्धता प्राप्त होती है। अतः हमें शुद्ध वैचारिक क्रांति के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाना होगा। अध्यक्ष सतीश नागपाल ने कहा कि आज विचारों की पवित्रता की अत्यंत आवश्यकता है।परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा,कुसुम भण्डारी,जनक अरोड़ा, कमला हंस,उषा सूद आदि के मधुर भजन हुए।

माता सीता देवी चावला को श्रद्धांजलि

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य माता सीता देवी चावला की श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित हुए और आर्य नेता श्री हरि चंद स्नेही जी से संगठन के मुद्दों पर चर्चा की। द्वितीय चित्र में स्व. श्रीमती सीता देवी का जीवन धर्म, सेवा, सादगी, करूणा, त्याग और भारतीय संस्कारों को प्रेरणास्त्रोत था। उनका स्नेहमय व्यक्तित्व, मधुर व्यवहार और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा सदैव स्मरणीय रहेंगे। उनका देहासवान परिवार, समाज और उन्हें जानने वाले लोगों के लिए अपूरणीयक्षति है।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970